SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 3

भूमंडलीकृत विश्व का बनना

भाग - 7

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1918 — 1939

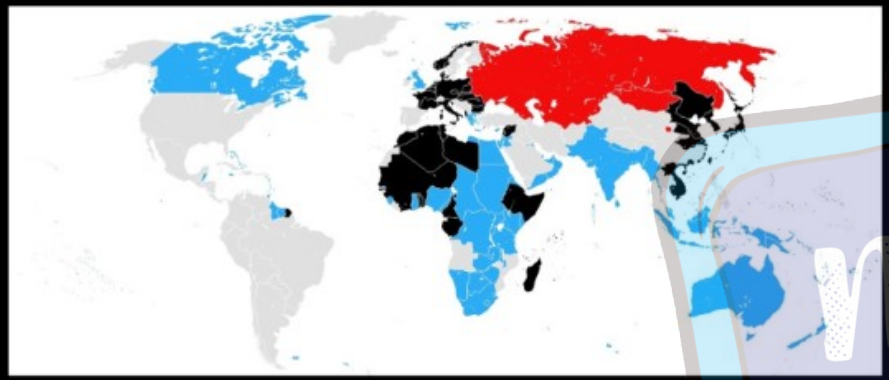

विश्व-अर्थव्यवस्था का पनर्निर्माण : युद्धोत्तर काल :-

- प्रथम विश्व युद्ध खत्म होने के केवल दो दशक बाद दूसरा विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया था।
- यह युद्ध भी 2 बड़े खेमो के बीच लड़ा गया था।
- एक गुट में धुरी शक्तियां थीं जिनमें मुख्य रूप से-
  1. नात्सी जर्मनी
  2. इटली
  3. जापान

2

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



दूसरे खेमे में मित्र राष्ट्र थे –

1. ब्रिटेन
2. फ्रांस
3. सोवियत संघ
4. अमेरिका

रूस

- यह युद्ध 6 साल तक चला था जो जल, थल तथा नभ (जमीन, हवा और पानी) के असंख्य मोर्चों पर लड़ा गया था।
- इस युद्ध में मौत और तबाही की कोई हद बाकी नहीं बची थी।



- इस जंग में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से करीब 6 करोड लोग मारे गये थे। जो कि 1939 की विश्व की जनसंख्या का लगभग 3 प्रतिशत था तथा करोड़ों लोग घायल हुए थे।
- अब तक युद्धों में मोर्चे पर मरने वालों की संख्या ज्यादा होती थी लेकिन इस युद्ध में ऐसे लोग ज्यादा मरे जो किसी मोर्चे पर नहीं लड़ रहे थे।
- यूरोप और एशिया के विशाल भू-भाग तबाह हुए।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



सोवियत रूस में युद्ध से तबाह स्तालिनग्राद

- कई शहर हवाई बमबारी या लगातार गोलीबारी के कारण मिट्टी में मिल गये।
- इस युद्ध में बेहिसाब आर्थिक और सामाजिक तबाही हुई।



रूस पर हमला करती जर्मन टुकड़ियाँ : जुलाई 1941 रूस पर हिटलर का हमला

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



युद्धोत्तर काल में पुनर्निर्माण :-

- युद्धोत्तर काल में पुनर्निर्माण का काम दो बड़ी शक्तियों के साये में आगे बढ़ा –
  1. अमेरिका
  2. सोवियत संघ
- पश्चिमी विश्व में अमेरिका आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से एक वर्चस्वशाली ताकत बन चुका था।
- दूसरी ओर सोवियत संघ भी एक वर्चस्वशाली शक्ति के रूप में सामने आया।
- नात्सी जर्मनी को हराने में सोवियत संघ की जनता ने भारी कुर्बानियाँ दी थीं।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

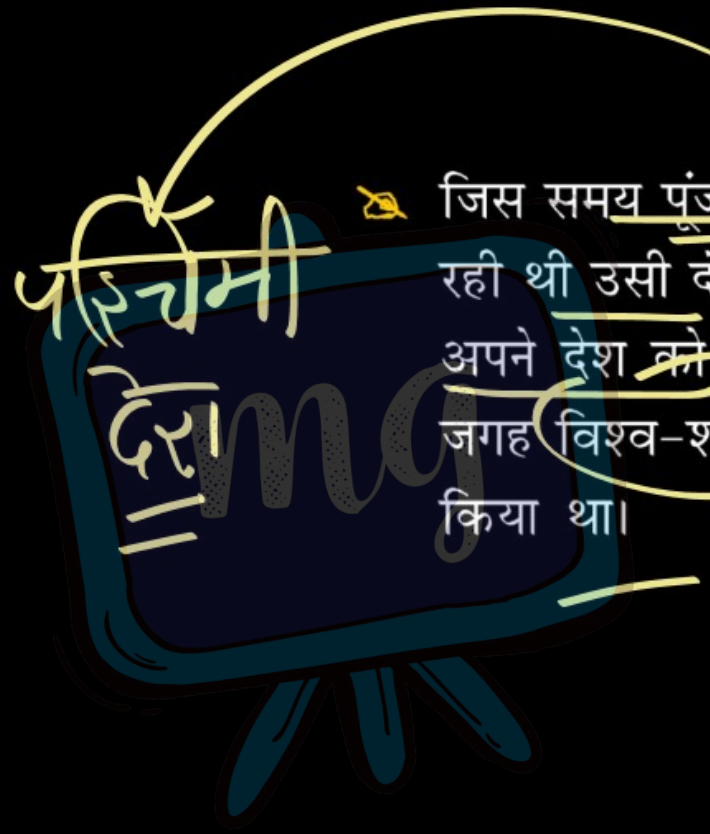

- जिस समय पूंजीवादी दुनिया महामंदी से जूझ रही थी उसी दौरान सोवियत संघ के लोगों ने अपने देश को एक पिछड़े खेतीहर देश की जगह विश्व-शक्ति की हैसियत में ला खड़ा किया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

दो सबक

- वृद्ध उत्पादन के साथ वृद्ध उपभोग
- पूर्ण रोजगार का लक्ष्य तब हासिल होगा जब सरकार पूंजी श्रम & वस्तुओं की आवाजाही पर नियंत्रण रखेगी।

युद्धोत्तर बंदोबस्त और ब्रेटन-वुड्स संस्थान:-

- दो विश्वयुद्धों के बीच मिले आर्थिक अनुभवों से अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों ने दो अहम सबक निकाले।

प्रथम सबक था :-

"वृहत उत्पादन करने वाला कोई भी औद्योगिक समाज तब तक कायम नहीं रह सकता जब तक उपभोग भी व्यापक न हो।"

- व्यापक उपभोग के लिए आमदनी ज्यादा तथा स्थिर होनी आवश्यक है।
- स्थिर आमदनी के लिए पूर्ण रोजगार आवश्यक है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- लेकिन बाजार पूर्ण रोजगार की गारंटी नहीं दे सकता।
- उपज, कीमत और रोजगार के उतार-चढ़ाव को सरकार द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है।
- इसलिए आर्थिक स्थिरता केवल सरकारी हस्तक्षेप से ही नियंत्रित की जा सकती थी।

दूसरा सबक था :-

- यह बाहरी दुनिया के साथ संबंधों के बारे में था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

1914-1918 → I WW

1939-1945 → II WW

+

महामंदी

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

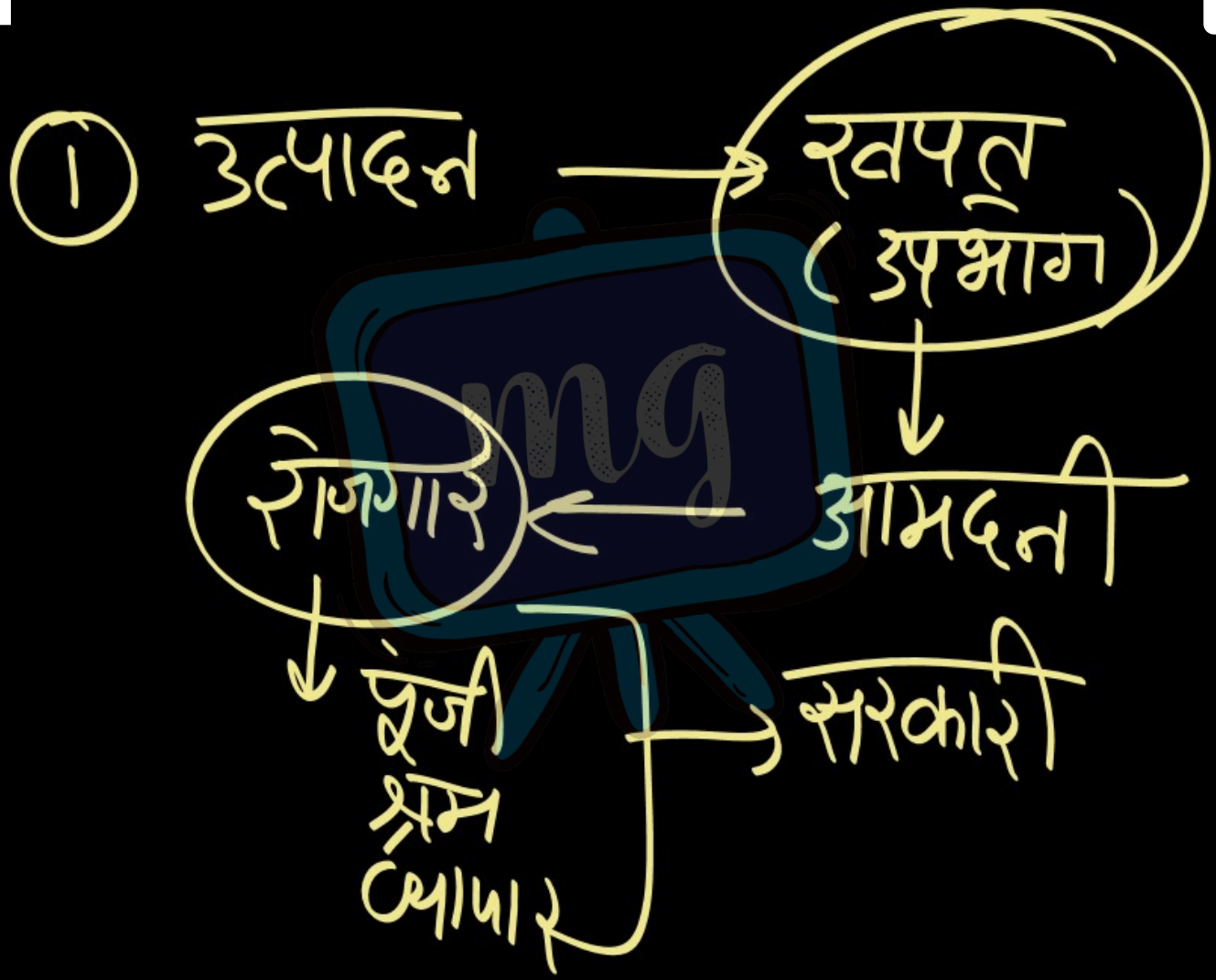

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पूर्ण रोजगार का लक्ष्य केवल तभी हासिल किया जा सकता है जब सरकार के पास वस्तुओं, पूंजी और श्रम की आवाजाही को नियंत्रित करने की ताकत हो।

- इन युद्धों के बाद अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था बनाये रखने का उद्देश्य रखा गया जिसमें –
  1. औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं
  2. पूर्ण रोजगार बनाये रखना था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

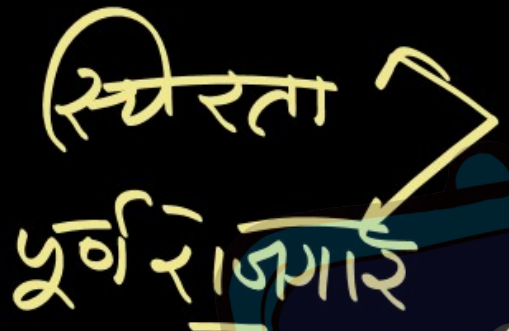

- इस फ्रेमवर्क पर कार्य करते हुए –
  'जुलाई – 1944 में अमेरिका में न्यू हैम्पशर के ब्रेटन-वुड्स नामक स्थान पर'
  संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था।
- इस सम्मेलन में 2 संस्थाओं की स्थापना की गई।
- सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए इस सम्मेलन में 'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' (I.M.F.) की स्थापना की गई।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

IBRD

- युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए पैसे के इंतजाम करने के वास्ते 'अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक' का गठन किया गया जिसे विश्व बैंक भी कहा जाता है।
- इसी वजह से I.M.F. तथा विश्व बैंक को 'ब्रेटन-वुड्ज संस्थान' या 'ब्रेटन वुड्ज ट्विन' (ब्रेटन-वुड्स की जुडवाँ संतान) भी कहा जाता है।
- विश्व बैंक तथा I.M.F. ने 1947 में औपचारिक रूप से काम करना शुरू किया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

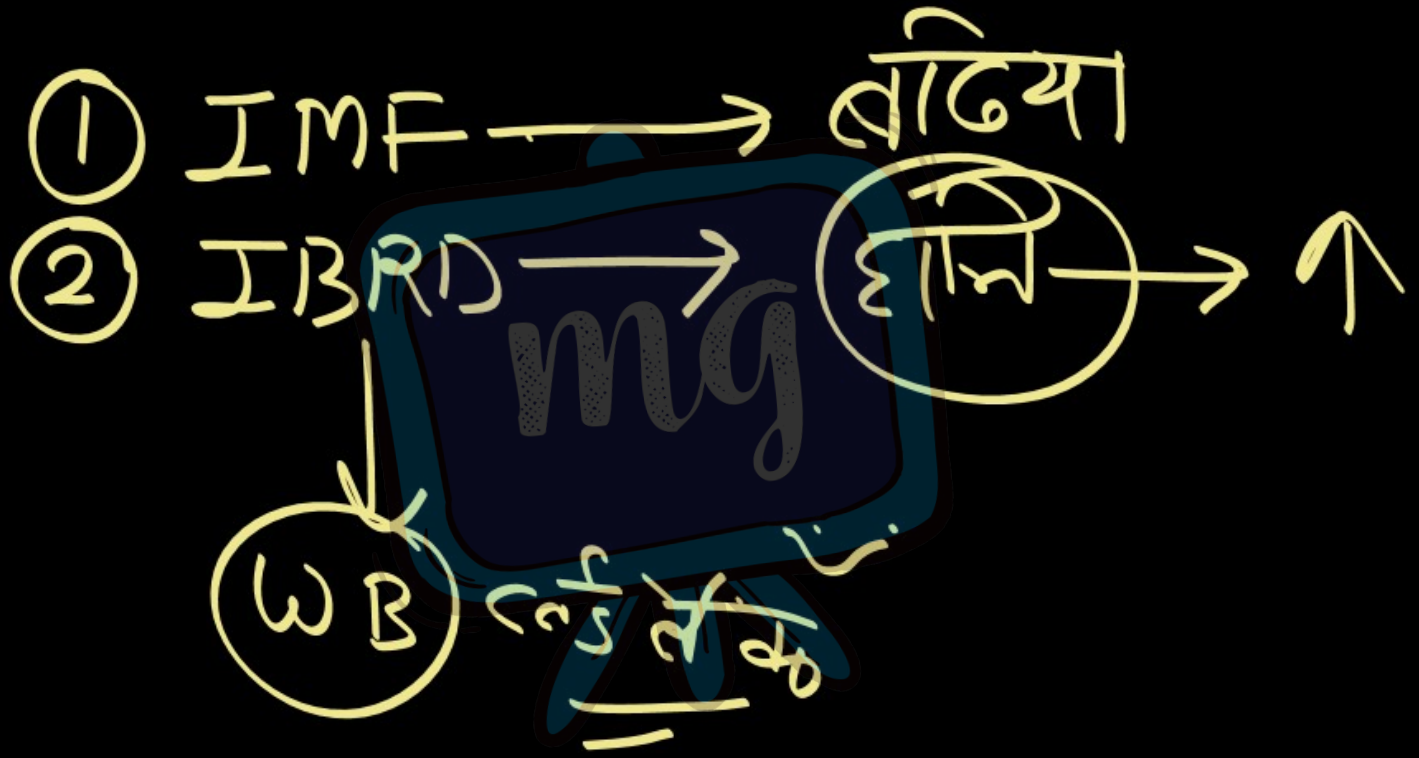

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

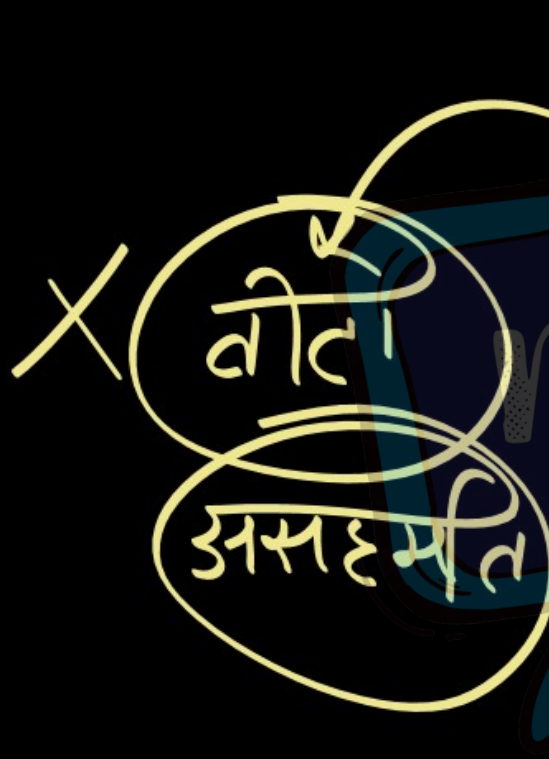

- इन संस्थानों की निर्णय प्रक्रिया पर पश्चिमी औद्योगिक देशों का नियंत्रण रहता है।
- अमेरिका विश्व बैंक और I.M.F. के किसी भी फैसले को वीटो कर सकता है।

वीटो :- विशेषाधिकार,
इस अधिकार के सहारे एक ही सदस्य की असहमति किसी भी प्रस्ताव को खारिज करने का आधार बन जाती है।



अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था – यह राष्ट्रीय मुद्राओं को एक दूसरे से जोड़ने वाली व्यवस्था है।

- ब्रेटन वुड्स व्यवस्था निश्चित विनिमय दरों पर आधारित होती थी। इसमें राष्ट्रीय मुद्राऐं – जैसे :- भारतीय मुद्रा रूपया-डॉलर के साथ एक निश्चित विनिमय दर से बंधा हुआ था।
- 1 डॉलर के बदले में कितने रूपये देने होंगे यह स्थिर रहता था।
- डॉलर का मूल्य सोने से बंधा रहेगा था।
- 1 डॉलर की कीमत 35 औंस सोने के बराबर निर्धारित की गई थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- हम जानते हैं कि
- जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर
- संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था।
- जिसमें औद्योगिक देशों के व्यापार की जरूरतों के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' IMF
- तथा युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए विश्व बैंक की स्थापना की गई थी।
- जिन्हें ब्रेटन-वुड्स संस्थान कहा गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बैंडन वुड्स ट्रेनस ?



SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

प्रारंभिक युद्धोत्तर वर्ष :-

- ब्रेटन-वुड्स व्यवस्था ने पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्रों और जापान के लिए व्यापार तथा आय में वृद्धि के लिए एक अप्रतिम युग का सूत्रपात किया।
- 1950 से 1970 तक विश्व व्यापार की विकास दर सालाना 8 प्रतिशत से भी ज्यादा रही।
- इस दौरान वैश्विक आय में लगभग 5 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही थी।
- विकास दर भी लगभग स्थिर हो गयी थी उसमें ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं आये।
- इस दौरान ज्यादातर औद्योगिक देशों में बेरोजगारी औसतन 5 प्रतिशत की दर से कम ही रही।
- इस दौरान तकनीक व उद्यम का विश्वव्यापी प्रसार हुआ।
- विकासशील देश विकसित औद्योगिक देशों के बराबर पहुँचने की जीतोड़ कोशिश कर रहे थे।
- इसके लिए उन्होंने आधुनिक तकनीक से चलने वाले संयंत्रों और उपकरणों के आयात पर बेहिसाब पूँजी का निवेश किया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

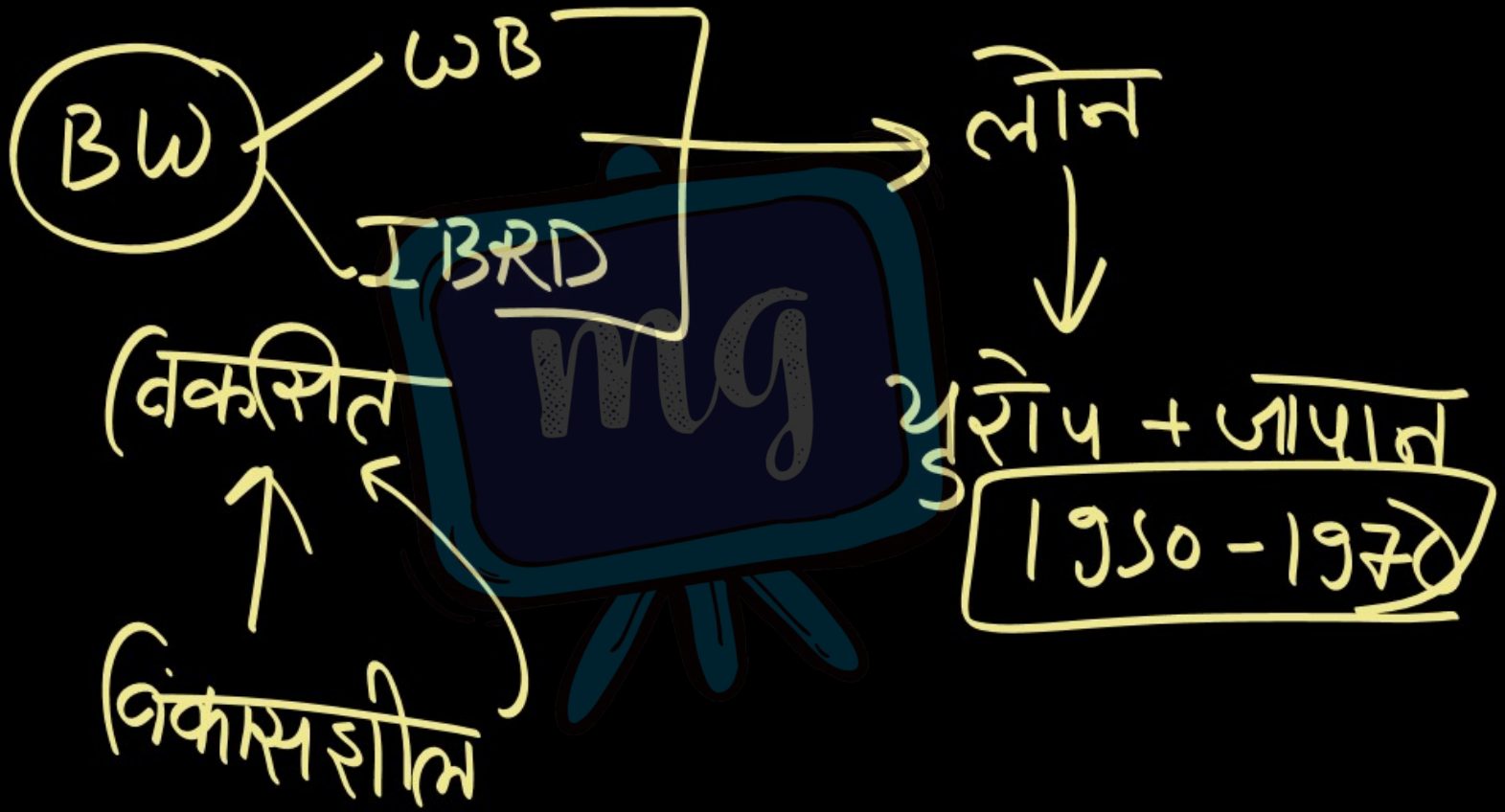

अनौपनिवेशीकरण और स्वतंत्रता

- दूसरा विश्व युद्ध खत्म होने के बाद भी विश्व का एक बहुत बड़ा भाग यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के अधीन था।
- अगले दो दशकों में एशिया और अफ्रीका के ज़्यादातर उपनिवेश स्वतंत्र स्वाधीन राष्ट्र बन चुके थे।
- लेकिन ये सभी देश गरीबी व संसाधनों की कमी से जूझ रहे थे।
- उनकी अर्थव्यवस्थाएँ लंबे समय तक अधीन रहने के कारण अस्त-व्यस्त हो चुकी थी।
- I.M.F. और विश्व बैंक का गठन तो औद्योगिक देशों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही किया गया था।
- ये भूतपूर्व उपनिवेशों में गरीबी की समस्या और विकास की कमी से निपटने में दक्ष नहीं थे।
- लेकिन जिस प्रकार यूरोप और जापान ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्गठन किया था उसके कारण ये देश I.M.F. और विश्व बैंक पर निर्भर भी नहीं थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

